शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में अभिव्यक्त दलित समस्याएँ

टाशी छोमू (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ
वनस्थली, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

दलित साहित्य के क्षेत्र में मोहनदास नैमिशराय ने हिंदी कथा साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनायी है। इसका मूल कारण यह है कि नैमिशराय जी ने बड़ी ही निर्भीकता के साथ अपनी रचनाओं में शोषित एवं वंचित दलितों का यथार्थ के धरातल पर चित्रण किया है। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से वंचित तबके को उनका उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया है। समाज में सबसे निम्न और हीन समझे जाने वाले दलितों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है। उन्होंने खुली आँखों से जो देखा, जो अनुभूत किया तथा खुद भी एक दलित होने के नाते भोगे हुए सच को अपने कथा साहित्य में उकेरा है। प्रस्तुत शोध पत्र में नैमिशराय जी की कहानियों में अभिव्यक्त विभिन्न समस्याओं पर विचार किया गया है।

भूमिका

साहित्य और समाज का अटूट सम्बन्ध है। साहित्य का मुख्य सरोकार समाज से है और समाज की सांस्कृतिक समस्याएं, संघर्ष और द्वंद्व इसमें मिलते हैं। भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था एक सच्चाई है। दुनिया में वर्ग भेद, लिंग भेद, नस्ल भेद दिखाई देता है, लेकिन भारतीय समाज में जाति और वर्ण व्यवस्था एक चुनौती के रूप में मौजूद है। दलित चेतना इन सभी के प्रति अपना संघर्ष का दृष्टिकोण जाहिर करती है और बताती है कि सामाजिक संरचना में किस प्रकार का प्रपंच व्याप्त है। वह अनेक प्रकार के षड़यंत्र का पर्दाफाश करती है। दलित चेतना यह बताती है कि वर्ण विषमता मानव समाज के विकास में सबसे बड़ी बढ़ा के रूप में उपस्थित है। मोहनदास नैमिशराय ने अपने साहित्य में गलित-दलित के प्रति पीड़ा, विषमता के प्रति आक्रोश और व्यवस्था के प्रति विद्रोह का चित्रण किया है। उन्होंने उन दबे-पिसे लोगों को शब्द दिए हैं, जो लिखना-पढ़ना तो दूर की बात है, बोलना तक नहीं जानते। दलित साहित्य के प्रेरणा स्रोत ज्योति बा फुले हैं। तुकाराम तात्या के पुस्तक में ब्राह्मणों की हिन्दू समाज की विभेदकारी नीति और छोटी जातियों पर किये गए अत्याचारों का वर्णन मिलता है। बाद में दलित साहित्य को डॉ.आंबेडकर ने वैचारिक आधार प्रदान किया। उनके दर्शन की पृष्ठभूमि ज्योति बा फुले और गौतम बुद्ध की दार्शनिक चेतना है। अमेरिका में नीग्रो साहित्य लिखा गया। इसने भी दलित लेखन को प्रेरणा प्रदान की। दलित चिंतन ने अनेक विचारकों को आत्मकथा लेखन के लिए प्रेरित किया, उनमें डॉ.आम्बेडकर मुख्य हैं। इसलिए मराठी में शरण

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कुमार लिम्बाले की 'अक्करमाशी', दया पवार की 'चाणी का स्वाद, लक्षण माने की 'बबलू की टहनियां' और केशव मेश्राम की 'हकीकत' आत्मकथाएं हमारे सामने आती हैं। इन्हें पढने के बाद हम वह नहीं रह जाते, जैसे पहले होते हैं। दिल दहला देने वाले संसार से साक्षात्कार करते हैं। इसी क्रम में ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'जूठन', सूरजपाल चौहान ने 'तबादला' और मोहनदास नैमिशराय ने 'अपने-अपने पिंजरे' आत्मकथा लिखी। इसमें लेखकों ने अपने भोगे हुए दुःख का यथार्थ चित्रण किया है।

नैमिशराय की कहानियों में चित्रित समस्याएँ

दलित कहानीकार मोहनदास नैमिशराय ने अन्य कहानीकारों की भांति अपनी कहानियों में दलित स्त्रियों का मार्मिक चित्रण किया है। स्त्री सदा से ही प्रताड़ित होती रही है। किसी भी समाज के सभ्य और उन्नत होने की यही कसौटी है कि वह समाज अपने यहाँ की स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करता है। स्त्रियों के यौन शोषण की समस्या लगभग हर युग और हर समाज में रही है। भारत में स्त्रियों की दुरवस्था, खासकर दलित स्त्रियों की दुदर्शा जग-जाहिर है। पुरुष वर्चस्ववादी समाज में स्त्री केवल पुरुष की हवस मिटाने की वस्तु है, मनोरंजन का साधन है, बच्चा पैदा करने का यंत्र है। उसका अपना कोई अस्तित्व नही है। बाल-विवाह, बहुपत्नी प्रथा और वेश्यावृति आदि समस्याओं के कारण औरतों की दुर्दशा दिन-प्रति-दिन बद से बदतर होती जा रही है। समाज में नारी को अपने पति, पिता, बच्चों और रिश्तेदारों के सामने नग्न किया जाता है। दलित कहानियों में इन्हीं दुर्दशाओं का वर्णन है और इसके विरूद्ध प्रतिशोध का भी चित्रण है। नैमिशराय जी ने 'कर्ज' कहानी में स्त्री पर होने वाले यौन शोषण का चित्रण किया है। अशोक द्वारा जमींदार का विरोध करने पर जमींदार उसकी माँ और बहन से बलात्कार कर अपना क्रोध निकालता है। अशोक द्वारा कर्ज अदा न करने पर जमींदार उसकी माँ और बहन के साथ अमानवीय व्यवहार करता है - "रात की कालिमा में माँ बेटी के जिस्म के साथ उनकी अस्मिता भी रौंद दी गई। इस काली रात ने कितनों को सफेद से स्याह न बनाया होगा। दो छायाओं ने उन माँ-बेटी के साथ अजीब तरह का छल किया था। वे टूट कर बिखर गई थी।"1 अशोक अपनी माँ और बहन की चिता के सामने कसम खाता है कि इन दोनों चिताओं की आग ठंडी होने से पहले हत्यारों को ढूंढ कर वह उनका खात्मा कर देगा। वह बदले की भावना लिए जमींदार के पास पहुँचता है और कहता है - "तुमने वह किया है जो एक इंसान को नही करना चाहिए। तुमने वह कुकर्म किया है जो एक हैवान करता है, तुम इंसान के वेश में दरिंदे हो। तुमने आज इस गाँव की न जाने कितनी अबलाओं की इज्जत लूटी, और उन्हें मौत की नींद सुला दिया। अब तक कोई न बोला और तुम्हारी हिम्मत बढ़ती गयी। हिम्मत बढ़ी तो अत्याचार भी बढ़े।"2 अदालत के न्यायाधीश और सरकारी वकील सभी सवर्ण होने के कारण वे दलित के पक्ष में निर्णय नहीं लेंगे, यह सोचकर महाजन को मारकर अशोक इसका बदला लेता है। वह कहता है - "इस गाँव की दलित अबलाओं का मुझ पर बहुत दिनों से कर्ज था।....नहीं महाजन, मैं तुम्हें किसी कीमत पर न छोडूंगा....अब तू मेरे हाथ से तो नहीं बच सकेगा। कहते हुए उसने बन्दूक की नाल उधर घुमा दी।"3

स्त्री के यौन शोषण का मार्मिक चित्रण 'अपना गाँव' नामक कहानी में हुआ है - "स्साली चमारी! ठाकुर से जबान लड़ाती है। अगले ही पल वे सब

बाज की तरह झपटे थे उस पर। पहले ठाकुर के मझले ने झपटा मारा। बाज पाँच थे और वह अकेली। पल भर में उसके बदन के कपड़े खींच-खींचकर फाड़ दिए गए। गाँव से दूर वीरान से रास्ते में, वह बहुत चीखी-चिल्लाई पर उन्होंने उसे पूरी तरह नंगा करके ही छोड़ा। भागने का प्रयास करती तो उसे लाठी से धकेल देता।"4

ठाकुर की यह हैवानियत देखकर पूरा गाँव इसके विरुद्ध प्रतिशोध लेने के लिए उतारु हो जाता है। वे प्रण करते है कि अब वे जुल्म सहन नही करेंगे - "अंधेरा घिरने से पहले उन्होंने ऐलान कर दिया। हम अनशन करेंगे। भूख-हड़ताल करेंगे। हमारी समाधियाँ यही बनेंगी। अन्न का एक दाना भी न खाएंगे। उनके मरने के बाद ही अब गाँव के लोग उनकी अर्थियों को कंधा दें। बहुत सह लिए ठाकुरों के पीढ़ी-दर-पीढ़ी जुल्म। अब और न सहेंगे। संयुक्त आह्वान था उनका।"5 जमींदार और ठाकुर गाँव में ब्याह लाये बहुओं को सबसे पहले अपने हवेली जबरदस्ती उठा कर ले जाते थे और उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया करते थे। 'रीत' कहानी में भी बुलाकी की पत्नी के साथ कुछ यूँ ही अमानवीय व्यवहार जमींदार द्वारा किया जाता है - "जमींदार ने रात भर उसे नोंचा था, उसके शरीर को जी भर कर मसला था। आखिर किसी को डर तो था ही नही। सुबह हुई तो वह जूठन की तरह उठाकर बाहर फेंक दी गई, उसके घर वालों के लिए।"6

दलित स्त्रियों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। जमींदारों द्वारा दलित स्त्रियों का यौन शोषण एक परंपरा-सी बन गई है। 'रीत' कहानी में इस बलात्कार की परंपरा को उजागर किया है - "दादा से बाप, बाप से बेटा और बेटे से पोते तक, न जाने कब से चली आ रही है बलात्कार की परंपरा। जैसे किसी ने जमीन के पट्टे के समान वह सब भी लिखकर दे दिया हो कि इस जमीन पर जब तक तुम्हारा वंश जीवित है तब तक दलित जाति के लोगों पर जुल्म और अत्याचार करते रहो, उनकी बहन-बेटियों के साथ रंगरंलिया मनाते रहो। इसमें कुछ भी पाप नही है।"7

कर्जदार दलित

दलित दिन रात खेती-बाड़ी एवं मजदूरी करते थे। लेकिन उन्हें इस मजदूरी के बदले पैसे या अनाज नही मिलता था। जीविकोपार्जन के लिए ये लोग महाजन, जमींदार और सूदखोरों से कर्ज लेते थे और विडम्बना यह है कि ये आजीवन कर्जदार रहते थे। कर्ज वसूल करने के नाम पर दलितों को बंधुआ मजदूर एवं गुलाम के रूप में रख कर अपने घरों और खेतों में काम करवाते थे। दलित नहीं चाहते थे कि वे कर्ज लेकर अपना और परिवार का जीविकोपार्जन करें पर वे विवश थे। मोहनदास नैमिशराय की कहानी 'कर्ज' का नायक अशोक आवाज़ उठाता है और महाजन के विरुद्ध लड़ाई लड़ता है। रामदीन महाजन से सौ रुपये का कर्ज ले लेता है। रामदीन की मृत्यु के बाद बेटे को अनायास ही याद आता है - "आज से चार वर्ष पूर्व पिताजी ने गाँव के महाजन से सौ रुपये कर्ज लिए थे, ... अभाव की स्थिति ने उन्हें लाचार बना दिया था। लाचारी और मजबूरी ने उन्हें और भी पंगु बना दिया था। ऐसे में गरीब आदमी के पास एक ही चारा रहता है। वह दूसरों के सम्मुख हाथ फैलाता है, कर्ज माँगता है। जिसके लिए उसे साहूकार की हजारों मिन्नतें करनी पड़ती है।"8 लेकिन कड़ी मेहनत के बावजूद भी ब्याज का एक आना भी कम न हुआ। "मई-जून की तपती दुपहरी हो या दिसम्बर-जनवरी की ठिठुरती सर्दी। रामदीन की जी-तोड़ मेहनत करने के बावजूद भी ब्याज का एक आना भी की न हुआ था। ....महाजन दिन

में ही काम नही लेता बल्कि रात में भी बुलाता।"9

दलित अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर बड़ा आदमी बनाना चाहता है, पर आर्थिक अभाव के कारण उन्हें कर्ज लेना पड़ता है। 'आधा सेर घी' कहानी में बलवन्ता अपने बेटे को डिप्टी कलेक्टर बनाना चाहता है, इसके लिए वह साहूकार से कर्ज लेता है। जब उससे भी खर्चा नही जुड़ पाता है तो वह बनिये से भी कर्ज माँगता है। उसके द्वारा बहुत गिड़गिड़ाने पर बनिया 20 रुपये निकालकर उसकी ओर बढ़ाते हुए कहता है - "अच्छा ले रख ले। मेरे दरवाजे पर रोवै मत। पर इतना याद रख लियो अगले माह बीस के तीस वापस करने पड़ेगें।"10 फलस्वरूप कर्ज पर ब्याज बढ़ता ही चला जाता है और आजीवन कर्जदार रहते हैं।

सामाजिक बदलाव के लिए आह्वान

दलित समता मूलक समाज की स्थापना के लिए आह्वान करता है। धीरे-धीरे दलितों में सामाजिक बदलाव ही भावना भी पैदा होने लगी। वे अपने परंपरागत व्यवसाय यानि मुर्दा जानवरों को मारना, उन्हें खाना, जूठन उठाकर खाना आदि को छोड़ने लगे। वे अब सामाजिक बदलाव के लिए समान अधिकार और समान व्यवसाय पर बल दे रहे थे। 'हमारा जवाब' कहानी में सामाजिक बदलाव के लिए दलितों में जोश दिखाई देता हैं - "दलितों में जोश था और साहस भी। गाँव-गाँव में अत्याचार हो रहे थे। जिनका वे अपनी ताकत के अनुसार सामना कर रहे थे। गाँवों में मुर्दा जानवरों को उठाना बंद कर दिया था। दलितों के बीच समान व्यवसाय के संकल्प की गूँज थी। वे परंपरागत व्यवसाय छोड़ रहे थे। यही सब देख और महसूस कर सवर्णों की पांवों की जमीन जैसे खिसकती जा रही थी। आजादी का सूरज अभी निकला नही था, पर उसके उगने का अहसास दलितों के भीतर जरूर होने लगा था।"11

दलित सामाजिक बदलाव के लिए संघर्षरत् है। 'आवाजें' कहानी में दलित अपने हक और अधिकार के लिए आवाज़ उठाते हैं। एक दिन आँधी की तरह यह बात उठी - "हम न जूठन लेंगे और न गंदगी साफ करेंगे।" दलितों में परिवर्तन की आग धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी। फूस में आग की तरह लपलपाती परिवर्तन की भावना दिन पर दिन जोड़ पकड़ती जा रही थी - "ठाकुर की बहू को बच्चा हुआ। पर मेहतरों के टोले से इस बार कोई नही आया। सभी मेहतरों की पंचायत हुई थी, जिसमें अधिकांश ने कसम उठाई - मैला उठाने कोई नही जाएगा, जो जाता है उसका हुक्का पानी बंद।"12 दलित समझ चुके है कि आज़ाद भारत में सब बराबर हैं, कोई छोटा-बड़ा नही - "ठाकुर पुराने दिन लद गये। अब तुम्हारी ठकुराहट नहीं चलेगी। जिनको तुम अब तक छोटा समझते रहे, वे अब छोटे नहीं। आजाद भारत में सब बराबर है।"13 जाहिर है आज दलित अत्याचार और अन्याय सहने को तैयार नही है। समाज में बदलाव लाने के लिए जीवन नष्ट हो जाने पर भी वे पीछे हटते नही दिख पड़ते।

रोटी, कपड़ा, मकान का प्रश्न

रोटी, कपड़ा, मकान मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। तन ढंकने के लिए कपड़ा मनुष्य की दूसरी आवश्यकता है। मनुष्य भूखे-प्यासे रहने से भी ज्यादा अपने को नग्न रहना बड़ी समस्या समझते हैं। लेकिन दलित समाज में कपड़े संबंधित प्रश्न भी अत्यंत ज्वलंत है। जिस गाँव ने शहर को रोटी दी, कपड़ा पहनाया और मकान दिये, वह स्वयं न भरपेट खाता है न ही अच्छा पहनता है। शहरों की तरह पक्के और चमकीले

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

घर गाँव की जमीन पर नही होते। सिर्फ पुरुष ही नही स्त्रियाँ भी अर्धनग्न रहने के लिए मजबूर हैं। यहाँ तक कि शादी-ब्याह, तीज-त्योहार तो दूर स्कूल का गणवेश सिलवाने तक के पैसे नहीं होते हैं। फटे-पुराने कपड़ों में लिपटी दुबली-पतली देह दलितों की अभावपूर्ण जिंदगी को व्यक्त करती है। कुछ ऐसे ही स्थिति 'कर्ज' कहानी के नायक अशोक की माँ और बहन की है। अशोक अपनी माँ और बहन की दयनीय स्थिति को देखते रह जाता है -"उनके फटे-पुराने कपड़ों पर से, जिन्हें शहरों में चिथड़ों की उपमा दी जाती है, उसकी निगाह हटती नही है, एक-एक सीवन को ध्यान से देखता है। नंगे हाथ-पाँव को देखता है।"14

दलितों में मकान की समस्या भी अत्यंत भयानक है। जिनके पास जमीन ही न हो उनके पास रहने योग्य मकान कैसे संभव हो। किराए के मकान की भी विकट समस्या दलितों के सामने आती है। वैसे कोई भी सवर्ण दलितों को मकान किराये पर नही देना चाहते है। गाँवों में दलितों का सामाजिक-आर्थिक-उत्पीड़न अधिक है। उन्हें निवास स्थान के लिए संघर्ष करना पड़ता है। शहरों में भी उनकी अवस्था इससे भिन्न नहीं है। वहाँ उन्हें मानसिक स्तर पर छुआछूत का दंश झेलना पड़ता है। 'हारे हुए लोग' में ऐसा एक प्रसंग है। आज शिक्षा का प्रचार-प्रसार होने पर भी पढ़े-लिखे शहरी लोगों में भी किस प्रकार जातिवाद का दंभ छिपा है, इसे कहानी में बखूबी दर्शाया गया है। कहानी का नायक कुरील एक दलित अफसर है जिसको शहर में किराये का मकान देने में सवर्ण हिम्मत नहीं करते। जिससे उस दलित अफसर को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इतने बड़े अफसर होने पर भी उसे दलित होने की सजा दर-दर पर मिलती है। शहर पहुँचने पर उसे अहसास होता है कि दलित चाहे पढ़ - लिखकर जितना भी बड़ा आफिसर हो जाए पर सवर्णों के सामने वे अछूत ही रहते हैं। शहर में किराये की मकान तलाशते - तलाशते वह थक जाता है इन सब से हताश होकर वह बड़बड़ा उठता है - "स्साला ऊंची जात वाला बनता है। इसे पता भी न होगा कि कितने राज मजदूरों ने इसका यह दड़बा बनाया होगा। मई-जून की चिलचिलाती धूप में ईंट-गारा ढोने वाले क्या ऊंची जात के रहे होंगे। फिर बढ़ई, लौहार न हों तो स्सालों की नानी याद आ जाए। देखें कैसे खुद बनाए मकान। इन ससुरों को तो मालूम भी न होगा, ईंटें कौन बनाता है, उसके लिए मिट्टी कहाँ से आती है। उस मिट्टी में लथपथ कौन होता है।"15

दलितों के पास मकान न होने के कारण फुटपाथ पर भी अपना जीवन काटने को मजबूर है। 'सिकन्दर' कहानी में एक दलित परिवार भी फुटपाथ पर अपना जीवन काटने को विवश है - "तेरे कू हवलदार से कहकर यह जगह दिलाई। इसे ही अपना घर समझ। इस बच्चे को पाल। इधर ही हग इधर ही मूत। सब कुछ तेरा इसी चौपाटी पर है।"16 उस औरत का यही खुरदरा फुटपाथ उसका मायका था और यही ससुराल। बचे-खुचे रिश्तेदार इसी फुटपाथ पर मिलने आते थे। खुशी और गम के क्षण इसी पेड़ की छांव के नीचे बीतते थे।

दलितों में भूख की समस्या भी अत्यंत ज्वलंत प्रश्न है। वे जूठन खाने को विवश है। शहर हो या गाँव दोनों जगह के दलित लोग पेट भर खाने के लिए जूठन इकट्ठा करते थे। व्यक्ति एक दिन भी भूखा रहे तो तड़प उठता है। लेकिन कुछ दलित ऐसे भी हैं जिसके पेट में एक दाना तक नही जाता है। भूख की समस्या 'सिकन्दर' कहानी में भी उभरकर आता है - "उसने भी सोने

का प्रयास किया, पर नींद नही आई। पेट में अन्न का एक दाना तक नही था आसपास से लोग आ जा रहे थे।"17 जब अनाज का एक दाना पेट में न जाए तो किसी को नींद कैसी आए ?

हमारे देश में एक ओर अन्न के एक दाने के लिए तरसते हुए लोग हैं तो दूसरी और अपने जानवरों को भी पोष्टिक आहार खिलाते लोग। 'मजूरी' कहानी में एक मजदूर कहती है - "ओ साब, म्हारी मजूरी कब मिलेगी, ओ साब, बतला ना, कब मिलेगी म्हारी मजूरी.....? .....लेकिन वह भद्र पुरुष उस महिला की ओर ध्यान न देकर अपनी पत्नी से अपने कुत्ते को कुछ देने को कहता है - "डार्लिंग अपना रोमी कुछ पतला हो गया है। इसे खाने को कुछ पौष्टिक चीजें दिया करो न।"18 अमीर व्यक्ति खुद तो ऐशो-आराम की जिंदगी जीता है पर अपने मजदूरों को मजदूरी तक नहीं देते हैं। मजदूर अपने हक के लिए लड़ते-लड़ते दम तोड़ देते हैं। दलित रोजी-रोटी के लिए लड़ते-लड़ते थक-हार जाते हैं। 'सपने' कहानी में लेखक ने कुछ यूँ ही वर्णन किया है - "आज भी तो वह लगभग हार ही गया था रोजी-रोटी की लड़ाई लड़ते-लड़ते।"19 इस प्रकार दलितों को हाडतोड मेहनत करने के बाद भी भरपेट रोटियाँ मयस्कर नही होती हैं।

दलितों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार होने के कारण आज दलित ऊँचे पद पर आसीन है। 'सिमटा हुआ आदमी' कहानी में दलित सुमन कुमार भी एक दलित है पर ऊँचे पद पर कार्यरत् हैं - "सुमन कुमार यानि बड़े साहब भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी थे। वह निदेशक बनकर इस आफिस में आये थे।"20 'हारे हुए लोग' कहानी में कुरील नाम का दलित सेक्शन आफिसर बनकर शहर आता है - "इनसे पूछिए मौर्य जी, ये कुरील साहब है। एस.डी.एस. में सेक्शन आफिसर प्रमोशन होकर आगरे से आये हैं।"21

रोजगार की समस्या

अन्य समस्याओं की तरह रोजगार की समस्या भी दलितों में देखने को मिलती है। 'सिमटा हुआ आदमी' कहानी में भोला भी अन्य पिता की तरह बेटे को नौकरी न मिलने पर चिंतित है। वह कह उठता है - "जिनकी बिन-ब्याई जवान बेट्टी घर में बैठी हो अर बेट्टा हाई सकूल कर कै भी नौकरी की खातर इधर-उधर धक्के खाता फिरता हो उसे फिकर न होगी भला।"22 दलित चाहे जितना भी पढ़-लिख ले पर रोजगार की समस्या से वे उभर नही पाते हैं। 'मैं, शहर और वे' नामक कहानी में भी नायक रोजगार की समस्या से जूझ रहा है। बेरोजगार का बोझ ढोते-ढोते जैसे वह थक गया था - "पहले बी.ए. किया, फिर एम.ए.। इस आशा से कि एम.ए. करने के बाद जल्दी नौकरी मिल जाएगी। पर नौकरी नही मिली थी। हाँ, निकम्मे बने रहने के संदर्भ में हजार लानतें जरूर मिली थी।"23 ऐसा नही है कि दलितों में सभी बेरोजगार हो। बहुत से ऐसे दलित भी हैं जो भारतीय प्रशासनिक सेवा जैसे ऊँचे पद पर कार्यरत् हैं। 'सिमटा हुआ आदमी' कहानी में भोला के आफिस में जो नये साहब आते हैं वह भी दलित हैं - "सुमन कुमार यानि बड़े साहब भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी थे। वह निदेशक बनकर इस आफिस में आये थे।"24

निष्कर्ष

दलित साहित्य की अधिकांश कहानियाँ जाति, वर्ग और धर्म के आधार पर दलितों के प्रति सवर्णों द्वारा किये जा रहे अत्याचार, गरीबी, अशिक्षा दलित नारियों का शोषण, अज्ञान, अभाव

और उन पर हो रहे अन्याय के विरुद्ध दलितों का विद्रोह, आक्रोश और संघर्ष आदि पर लिखी गई है। नैमिशराय जी ने कहानियों के माध्यम से इस सत्य को स्थापित करने का प्रयास किया है कि समाज में एक भिन्न प्रकार के वर्ण (दलित) में पैदा होने के कारण एक ही समाज में रहते हुए भी अस्पृश्य होने की पीड़ा दलितों को सहनी पड़ी है। युगों-युगों से गुलामी की जंजीर में जकड़े दलित आज भी पूरी तरह से मुक्त नहीं है। कहानियों का उद्देश्य दलितों को शोषण और उत्पीड़न से मुक्ति दिलाकर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बराबरी दिलाना है, जिन्होंने उन्हें सदियों से अस्पृश्य, पराधीन और कमजोर बनाये रखा। अब धीरे-धीरे उनकी अस्त-व्यस्त जीवन में सुधार आने लगा है और अब उनमें भी शिक्षा का प्रचार-प्रसार होने लगा है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. मोहनदास नैमिशराय - हमारा जवाब, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2005, पृष्ठ 23
2. वही, पृष्ठ. 26
3. वही, पृष्ठ 20
4. मोहनदास नैमिशराय, आवाज़े, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2011, पृष्ठ 38
5. वही, पृष्ठ 43
6. वही, पृष्ठ 120
7. वही, पृष्ठ 122
8. मोहनदास नैमिशराय, हमारा जवाब, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2005, पृष्ठ 11
9. वही, पृष्ठ 11
10. वही, पृष्ठ 77
11. मोहनदास नैमिशराय - हमारा जवाब, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2005, पृष्ठ. 49
12. मोहनदास नैमिशराय, आवाज़े, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2011, पृष्ठ 17
13. वही, पृष्ठ 21
14. मोहनदास नैमिशराय, हमारा जवाब, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2005, पृष्ठ 13
15. मोहनदास नैमिशराय, आवाज़े, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2011
16. मोहनदास नैमिशराय, हमारा जवाब, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2005, पृष्ठ 102
17. वही, पृष्ठ 105
18. वही, पृष्ठ 135
19. वही, पृष्ठ 92
20. वही, पृष्ठ 129
21. मोहनदास नैमिशराय, आवाज़े, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2011, पृष्ठ 75
22. मोहनदास नैमिशराय, हमारा जवाब, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2005, पृष्ठ 129
23. मोहनदास नैमिशराय, आवाज़े, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2011, पृष्ठ 137
24. मोहनदास नैमिशराय, हमारा जवाब, श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2005, पृष्ठ 130